जोबनेर कृषि

जुलाई, 2025 | वर्ष : 10 | अंक : 7 | प्रति अंक मूल्य 25 रुपये | वार्षिक शुल्क : 250 रुपये

प्रसार शिक्षा निदेशालय

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय
जोबनेर, जिला–जयपुर (राज.) 303 329

भिंडी की उन्नत किस्में एवं खेती और उनका प्रबंधन

डॉ. रंजना मीणा एवं डॉ. आर. पी. घासोलिया
पादप रोग विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

परिचय

हमारे देश में किसान कई तरह की सब्जियों की खेती करते हें, भिंडी सब्जियों में सबसे लोकप्रिय सब्जी है। भिंडी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज पदार्थों जैसे कैल्शियम, फॉस्फोरस के अतिरिक्त विटामिन ए, बी, सी, थाईमीन एवं रिबोफ्लेविन भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं जो कि यह स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक होते हैं।

भिंडी की खेती करने के लिए उपयुक्त जलवायु व तापमान : भिंडी की खेती के लिए उष्ण और नम जलवायु की आवश्यकता है। फसल ग्रीष्म तथा खरीफ, दोनों ही ऋतुओं में उगाई जाती हैं। भिंडी का पौधा दीर्घ अवधि का गर्म व नम वातावरण में अच्छा विकास करता है। भिंडी के बीज उगने के लिए 27–30 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान उपयुक्त होता है। 17 डिग्री से कम जलवायु भिंडी के बीज में अंकुरण नहीं होता है। गर्मी में 42 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा तापमान इसकी फसल को काफी हद तक नुकसान पहुंचाता हैं, क्योंकि ऐसे में इसके फूल गिरने लगते हैं। जिस वजह से इसका सीधा असर उपज पर पड़ता है।

भिंडी की खेती करने के लिए उपयुक्त भूमि : भिंडी की खेती किसान सभी प्रकार की मिट्टी में कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए हल्की दोमट मिट्टी काफी अच्छी मानी जाती है। क्योंकि इस मिट्टी में जल निकास काफी अच्छी तरह हो जाता है। इसके साथ ही इसका पी.एच.मान लगभग 6 से 6.8 तक होना चाहिए।

भिंडी की खेती करने के लिए खेत की तैयारी : भिंडी की खेती करते समय किसान सबसे पहले खेत की 2 से 3 बार अच्छे से जुताई कर लें। इसके साथ ही खेत को भुरभुरा करके उस पर पाटा चला लें ताकि खेत अच्छी तरह से समतल हो जाए।

भिंडी की उन्नत किस्में

पूसा ए-4 : यह किस्म ICAR नई दिल्ली द्वारा 1995 में विकसित की गई है। फल 12 से 15 से.मी. लम्बे व आकर्षण होते हैं। यह किस्म एफिड तथा जैसिड तथा पीतरोग यैलो वेन मोजेक विषाणु रोग के प्रति सहनशील है। बुवाई के दो हफ्ते में फूल निकलते है व डेढ़ माह में पहली तुड़ाई के लिए फल तैयार हो जाते हैं।

VRO-6 : यह किस्म 2003 में भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी द्वारा विकसित की गई है। इसे काशी प्रगति भी कहा जाता है। भिंडी की यह किस्म येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी है। इस किस्म का पौधा वर्षा ऋतु में 175 सेमी. तथा गर्मी में 130 सेमी. लम्बा होता है।

हिसार उन्नत : वर्षा तथा गर्मियों दोनों मौसमों में उगाई जाने वाली यह प्रजाति चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा विकसित की है। इस किस्म के पौधें 90–120 सेमी. तक ऊंचाई वाले होते हैं तथा इंटरपनोड पास पास होते हैं। पौधे में 3–4 शाखाएं प्रत्येक नोड से निकलती हैं। इस किस्म के फल 15–16 सेमी. लम्बे हरे तथा आकर्षक होते हैं। पहली तुड़ाई हेतु 46–47 दिनों बाद भिंडी में फल तैयार हो जाते है। 12–13 टन प्रति हैक्टेयर की दर से उपज मिलती है।

परभनी क्रांति : भिंडी की यह पीत रोगरोधी प्रजाति का विकास 1985 में मराठवाडाई कृषि विश्वविद्यालय, परभनी द्वारा किया गया है। फल गहरे हरे एवं 15–18 सेमी. लम्बे होते हैं। बुवाई के 50 दिन बाद फल आना शुरू होता जाते हैं। इस किस्म की पैदावार 9–12 टन प्रति है।

पंजाब-7 : यह किस्म भी पीतरोग रोधी है। यह प्रजाति पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा विकसित की गयी है। फल हरे एवं मध्यम आकार के होते हैं। बुआई के लगभग 55 दिन बाद फल आने शुरू हो जाते हैं। इसकी पैदावार 8–12 टन प्रति हैक्टेयर है।

बुवाई का समय : भिंडी की बुवाई को कतारों में करनी चाहिए। इसके लिए ध्यान दें कि खेत में कतारों की दूरी करीब 25 से 30 से.मी. तक होनी चाहिए। इसके साथ ही पौधों की दूरी भी करीब 15 से 20 से.मी. तक की रखनी चाहिए।

बुवाई विधि और बीज दर : भिंडी की खेती में बीज की मात्रा उन्नत किस्म, मिट्टी की क्वालिटी, बुवाई की दशाओं पर निर्भर करता है। वर्षाकालीन भिंडी की खेती में 8–10 किलोग्राम तथा ग्रीष्मकालीन भिंडी की खेती में 18–20 किलोग्राम उन्नत किस्म का प्रमाणित बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई के पहले बीज को 10–15 घंटे तक पानी में भिगो दे। फिर बीज को निकाल कर छाया में एक घंटे लगभग सुखा लें। ऐसा करने से बीज में अंकुरण अच्छा होता है। खेत में बीजों को लाइन से लाइन की दूरी 45–60 सेमी. व पौध से पौध की दूरी 25–30 सेमी. के अंतरण पर 3–4 सेमी. गहराई पर बो दें।

उर्वरक : भिंडी की खेती हेतु तैयारी के समय 20 से 30 टन प्रति हैक्टेयर की दर से खाद डालें। इसके अलावा रासायनिक उर्वरक के रूप में नाइट्रोजन 100, फॉस्फोरस 60 तथा पोटाश 50 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से दें। खेत की तैयारी से पहले नत्रजन की 40 किलोग्राम व फॉस्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा मिट्टी में मिला दें। शेष बची नाइट्रोजन की मात्रा खड़ी फसल में दो बार टॉप ड्रेसिंग के माध्यम से दें।

सिंचाई : गर्मियों के मौसम में भिंडी की फसल सिंचाई (Irrigation of ladyfinger) लगभग 5 से 7 दिनों के अन्तराल पर करते रहना चाहिए। अगर खेत में नमी न हो तो फसल की बुवाई (Sowing) से पहले भी आप एक बार सिंचाई कर सकते हैं।

निराई-गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण : भिंडी की फसल में 4 से 5 बार निराई–गुड़ाई कर, इसके बाद 15–20 दिन में एक बार निराई करें। इसके अलावा रासायनिक खरपतवार नाशक के रूप में पेंडिमिथालीन या फ्लुक्लोरालिन का भी प्रयोग कर सकते हैं। पेंडीमिथालीन (स्टाम्प) 1.0 कि. ग्रा. या बेसालिन 10 लीटर प्रति ग्राम को 700–800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर में छिड़काव करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं।

भिंडी की फसल तोड़ाई : भिंडी के फलों की तुड़ाई उसकी किस्म पर निर्भर करती है। इसकी तुड़ाई लगभग 45 से 60 दिनों में शुरू कर देनी चाहिए। इसकी 4 से 5 दिनों के अन्तराल पर रोजाना तुड़ाई करें।

फसल संरक्षण :

भिंडी की खेती में होने वाली बीमारियां व उनकी रोकथाम :

आर्द्रगलन (Damping off) **:** इस रोग का प्रकोप भिंडी पर दो तरह से होता है। पहला पौधे का जमीन में बाहर निकलने से पहले एवं दूसरा जमीन की सतह पर स्थित तने का भाग काला पड़कर गिर जाता है और बाद में पौधा सुख जाता है। यदि वातावरण में अधिक आर्द्रता होती है तो यह रोग ज्यादा बढ़ता है। तो इसलिए फसल का सही समय पर उपचार करते रहना चाहिए।

आर्द्रगलन का निवारक नियंत्रण :

❖ भिंडी की फसल में बहुत सिंचाई नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे आर्द्रता बढ़ती है।
❖ जल भराव का उचित प्रबंध करना चाहिए।
❖ भिंडी के बीज का उपचार ट्राइकोडर्मा विरडी 4 ग्राम प्रति किलोग्राम

बीज से करना चाहिए।

- ❖ मिट्टी में ट्राइकोडर्मा विरडी का 2 लीटर प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर मिट्टी को भिगोना चाहिए।

आर्द्रगलन का रासायनिक नियंत्रण :

- ❖ रासायनिक उपचार के लिए कार्बेडेजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. को 500 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से 150 लीटर पानी ड्रेंचिंग करें।
- ❖ अगर ज्यादा समस्या हो तो कॉपर ऑक्सीक्लाराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. को 500 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से 150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव / ड्रेंचिंग करें।

छाछ्या या पाउडरी मिल्ड्यू : भिंडी की फसल में इस रोग के कारण पत्तियों या तने पर सफेद चूर्णी लिए हुए धब्बे दिखाई देते हैं। ज्यादा प्रभावित पौधे की पत्तियां पीली पड़कर गिर जाती है। इस रोग का यदि वातावरण में अधिक आर्द्रता होती है तो ज्यादा देखने को मिलता है। यह रोग की समस्या सबसे पहले पुरानी पत्तियों पर अधिक देखने को मिलती हैं।

छाछ्या रोग का निवारक नियंत्रण :

- ❖ भिंडी की फसल में पाउडरी मिल्ड्यू रोग के नियंत्रण के बैसिलस सबटिलिस 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

पाउडरी मिल्ड्यू का रासायनिक नियंत्रण :

- ❖ रासायनिक उपचार में हैक्साकोनोजोल 5 प्रतिशत ईसी. की 1.5 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ अगर ज्यादा समस्या हो तो एजांक्सिस्ट्रोबिन 18.2 प्रतिशत और डिफेनोकोनाजोल 11.4 प्रतिशत एससी 200 मिली प्रति एकड़ प्रति 200 लीटर पानी को 500 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से 150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

भिंडी का पीला शिरा मोजेक रोग : भिंडी में इस रोग से पत्तियों की शराएं पीली व चितकबरी और प्यालेनुमा दिखाई देने लगती है। अगर की बात करे तो फल भी छोटे और कम लगते हें। भिंडी की फसल में खतरनाक बीमारी विषाणु द्वारा फैलता है तथा यह रोग सफेद मक्खी कीट से फैलता हैं।

भिंडी का पीला शिरा मोजेक रोग का निवारक नियंत्रण :

- ❖ भिंडी की रोधी किस्मों का चयन करें।
- ❖ रोग के लक्षण दिखाई देते ही रोगग्रसित पौधों को खेत से बाहर कर दें।
- ❖ किसी कीटनाशी दवा जैसे इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. 0.5 मिली प्रति किलोग्राम बीज में मिलाकर करना चाहिए।
- ❖ रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए येलो ट्रेप 15 ट्रेप प्रति एकड़ का प्रयोग करना चाहिए।

भिंडी का पीला शिरा मोजेक रोग का रासायनिक नियंत्रण :

- ❖ सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए डाइमिथोएट 30 प्रतिशत ईसी. की 1.5 मिली. या प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. 0.5 मिली।

सस्कोस्पोरा झुलसा : भिंडी की खेती को झुलसा सबसे अधिक नुकसान पहुंचाता है। इस रोग के कारण फलों की गुणवत्ता खराब हो जाती है। इस रोग के कारण भिंडी के पत्तों पर विभिन्न प्रकार के लमूतरे धब्बे उभर आते हैं तथा किनारों से मुड़ जाते हें। इस रोग के बचाव हेतु शुरूआत में ही झुलसा प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव करें तो बेहतर हैं। इसके अलावा रोधी पौधों को उखाड़कर जमीन के नीचे दबा देना चाहिए या फिर खेत से दूर ले जाकर जला दें। डायथेन एम–45 (0.25 प्रतिशत) 250 ग्राम दवाई का 200–300 लीअर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें तथा 15 दिनों के पश्चात! फिर से उस दवाई का छिड़काव करें।

भिंडी की खेती में लगने वाले कीट व उनकी रोकथाम

भिंडी में लगने वाले कीट का नाम	हानिकारक कीट की विशेषताएं	रोकथाम व उपचार
लाल माईट कीट	लाल रंग का कीट है। इस कीट के शिशु तथा व्यस्क दोनों भिंडी की फसल को हानि पहुंचाते हैं। यह पत्तों के नीचे की सतह से रस चूसते हैं। पत्तियों को पोषण न मिलने के कारण व आकार छोटा हो जाता है। रस चूसने के कारण पत्तियों में धब्बे बन जाते हैं। वयस्क लाल कीट भिंडी के पर मकड़ी की तरह जाला बना देते हैं तथा पत्तियों के नोक पर जमा हो जाते हैं। इस कीट के कारण पत्ते सूख जाते हैं। पौधे में फलन कम लगती है।	लाल माइट कीट की रोकथाम के लिए प्रेम्पट 25 ई.सी. 600 मिली. बाय की दवाई का 400–600 लीटर पानी के साथ घोल बनाकर एक हैक्टेयर भूमि के अन्दर छिड़काव करने लाल माईट को नियन्त्रित किया जा सकता है।
भिंडी की सफेद मक्खी	सफेद मक्खी भी लालमाइट के जैसे ही फसल को नुकसान पहुंचाती है। पत्तियों की नीचे की सतह पर शिशु एवं वयस्क कीट चिपक कर रस चूसते हैं। पत्तियों को पोषण ना मिलने के कारण पौधे की पत्तियों में पीला शिरा रोग (येलो मोजेक वायरस) रोग फैल जाता है। मानसून वाली भिंडी की खेती में यह रोग तेजी से फैलता हैं।	भिंडी की सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए 300–500 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. नामक दवाई को 200–300 लीटर पानी में अच्छी तरह घोलकर एक एकड़ भूमि में छिड़काव करें।
फली छेदक सूण्डियां	यह कीट पौधे की टहनियों तथा पत्तियों में व कलियों में छेद करती है। उसके बाद फल में सुराख करके फल को नुकसान पहुंचाती है। सूण्डियों के प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था में टहनियां झड़ने लगती हैं। और पौधा मर जाता है। फल विकृत हो जाते हैं। जिससे फलों की गुणवत्ता खराब हो जाती है। किस्म को अच्छा बाजार भाव नहीं मिल पाता है। जिसके कारण किसान की फसल का बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलता। इसके कारण किसान को हानि होती है। विकसित हो रहा फल विकृत हो जाता है।	फली छेदक सूडियों के फसल पर लक्षण देखते ही मैलाथियॉन 0.05 प्रतिशत या कार्बेरिल 0.1 प्रतिशत या 75–80 मिली. स्पाईनोसैड 45 ई.सी. को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ में छिड़काव करें। एक हैक्टेयर के लिए मात्रा डबल कर लें तथा दो सप्ताह के बाद एक छिड़काव ओर कर दें।
हरा तेला	भिंडी के फसल पर लाल माइट व सफेद मक्खी की भांति हरा तेला कीट के शिशु व व्यस्क कीट कोमल पत्तियों के नीचे की सतह से कोशिकाओं के रस को चूस लेते हैं। जिसके कारण पत्तियों की ऊपरी सतह छोटे–छोटे हल्के पीले रंग के धब्बे बन जाते है। पोषण ना मिलने से पत्ते पीले पड़कर सूख जाते हैं।	भिंडी को तेले से बचाने के लिए मेलाथियान0.05 प्रतिशत (100 मि.ली. साईथियान / मैलाथियान / मासथियॉन 50 ई.सी.) दवाई को 150 से 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

उपज : भिंडी के फलों की तुड़ाई उसकी किस्म पर निर्भर करती है। इसकी तुड़ाई लगभग 45 से 60 दिनों में शुरू कर देनी चाहिए। इसकी 4 से 5 दिनों के अन्तराल पर रोजाना तुड़ाई करें। भिंडी की खेती उन्नत किस्मों और अच्छी देखभाल के साथ की जाए, तो इससे प्रति हैक्टेयर करीब 60 से 70 क्विंटल उपज प्राप्त हो जाती हैं।

जलवायु स्मार्ट कृषि, इसके अवसर और चुनौतियाँ

दिलीप चौधरी1, राजेंद्र चौधरी2, सुरज्ञान रुंडला3, विजय गुर्जर4, बंटी5 और रीमा6
1विद्या वाचस्वती, सस्य विज्ञान विभाग, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
2विद्या वाचस्वती, सस्य विज्ञान विभाग, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ
3विद्या वाचस्वती, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हरियाणा
4विद्या वाचस्वती, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
5विद्या वाचस्वती, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू
6स्नातकोत्तर, विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी, जयपुर

जलवायु स्मार्ट कृषि (सीएसए)

जलवायु स्मार्ट कृषि (सीएसए) एक समग्र दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य कृषि प्रणालियों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अधिक लचीला बनाना, उत्पादकता बढ़ाना और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना है। इसमें सतत भूमि प्रबंधन, उन्नत सिंचाई तकनीकें, सटीक कृषि, और लचीली फसल किस्मों का उपयोग शामिल है।

जलवायु–स्मार्ट कृषि (सीएसए) के तीन मुख्य स्तंभ हैं खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी। ये स्तंभ आपस में जुड़े हुए हैं और इनका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन को संबोधित करते हुए और खाद्य सुरक्षा को बढ़ाते हुए कृषि उत्पादकता को स्थायी रूप से बढ़ाना है।

1. **खाद्य सुरक्षा :** जलवायु स्मार्ट कृषि का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कृषि पद्धतियाँ स्थायी खाद्य उत्पादन में योगदान दें और किसानों की आय बढ़ाएँ।
2. **जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन :** यह स्तंभ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों, जैसे सूखा, बाढ़ और तापमान में उतार–चढ़ाव के प्रति लचीलापन बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है, ऐसी पद्धतियाँ अपनाकर जो किसानों को बदलती जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल होने में मदद करती हैं।
3. **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी :** जलवायु परिवर्तन को कम करने के प्रयासों में योगदान देते हुए कृषि से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने औरध्या हटाने का प्रयास करता है।

सीएसए को अपनाने में प्रमुख चुनौतियाँ :

1. **वित्तीय बाधाएँ :** सीएसए प्रौद्योगिकियों और बुनियादी ढांचे में प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता होती है, जो छोटे और सीमांत किसानों के लिए कठिन हो सकता है।
2. **ज्ञान और प्रशिक्षण की कमी :** किसानों में जलवायु स्मार्ट कृषि प्रथाओं के प्रति जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी है, जिससे प्रभावी कार्यान्वयन में बाधाएँ आती हैं।
3. **नीतिगत और संस्थागत समर्थन की कमी :** जलवायु स्मार्ट कृषि के लिए उपयुक्त नीतियों और संस्थागत समर्थन की कमी है, जिससे इसके व्यापक अपनाने में रुकावट आती है।
4. **बाजार और मूल्य निर्धारण की समस्याएँ :** जलवायु स्मार्ट कृषि उत्पादों के लिए बाजार की अपर्याप्तता और उचित मूल्य निर्धारण की कमी है, जिससे किसानों के लिए आर्थिक रूप से आकर्षक नहीं होते।
5. **संस्कृति और सामाजिक प्रतिरोध :** पारंपरिक कृषि पद्धतियों से सीएसए प्रथाओं का भिन्न होना, किसानों में प्रतिरोध उत्पन्न करता है।

जलवायु स्मार्ट कृषि के लिए अनुकूलन रणनीतियाँ

1. **स्थानीय संदर्भ के अनुसार प्रथाओं का अनुकूलन :** जलवायु स्मार्ट कृषि रणनीतियाँ स्थानीय कृषि–पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलित की जानी चाहिए।
2. **जल प्रबंधन में सुधार :** वर्षा जल संचयन, ड्रिप सिंचाई और जल पुनर्चक्रण जैसी तकनीकों का उपयोग जल संकट से निपटने के लिए किया जाना चाहिए।
3. **शोध और विस्तार सेवाओं में निवेश :** किसानों को जलवायु स्मार्ट कृषि प्रथाओं के बारे में प्रशिक्षित करने के लिए शोध और विस्तार सेवाओं में निवेश किया जाना चाहिए।
4. **नीतिक ढांचे को मजबूत करना :** जलवायु स्मार्ट कृषि को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त नीतियाँ और संस्थागत समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए।

राजस्थान में जलवायु स्मार्ट कृषि की प्रासंगिकता

राजस्थान जैसे क्षेत्रों में, जहाँ कृषि मानसून पर निर्भर है और जल संकट जैसी समस्याएँ हैं, जलवायु स्मार्ट कृषि महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। हालांकि, किसानों को वित्तीय संसाधनों, ज्ञान और नीतिगत समर्थन की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जलवायु स्मार्ट कृषि को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए इन चुनौतियों का समाधान आवश्यक है।

हाल की पहलें

1. **विकसित कृषि संकल्प अभियान :** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल के तहत, भारतीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (IIVR) ने उत्तर प्रदेश के छह जिलों में 2,000 से अधिक किसानों को जलवायु स्मार्ट कृषि प्रथाओं के बारे में जागरूक किया।
2. **विकसित कृषि संकल्प अभियान :** उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य किसानों को जलवायु स्मार्ट कृषि प्रथाओं के बारे में प्रशिक्षित करना है।

कस्टम हायरिंग सेंटर : किसानों के लिए लागत में कमी और यांत्रिक खेती का प्रभावी माध्यम

डॉ. शिरीष शर्मा1, डॉ. वी.एस. मीना2 एवं डॉ. डी.के. बैरवा3
1सहायक आचार्य, कृषि अर्थशास्त्र, एस.के.आर.यू., बीकानेर
2सहायक आचार्य, कृषि अर्थशास्त्र, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
3सहायक आचार्य, कीट विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

भारत में 80 प्रतिशत अधिक किसान छोटे और सीमांत श्रेणी में आते हैं, जिनके लिए महंगे कृषि यंत्र खरीदना संभव नहीं होता। ऐसे में कस्टम हायरिंग सेंटर (CHC) किसानों को किराए पर आधुनिक कृषि यंत्र उपलबध कराकर खेती को सुलभ और लाभकारी बना रहे हैं। कस्टम (CHC) ऐसे केन्द्र हैं जहां ट्रेक्टर, थ्रेसर, रीपर, रोटावेटर, सीड

ड्रिल, स्प्रेयर आदि आधुनिक कृषि यंत्र किसानों को किराए पर उपलब्ध कराए जाते हैं। इन केन्द्रों का उद्देश्य छोटे किसानों को सस्ती दरों पर यंत्र उपलबध कराना हैं। जिससे वे समय पर खेती कर सकें और उत्पादन लागत को कम कर सकें।

केन्द्र सरकार की "सब मिशन ऑन एग्रीकल्चरल मेकनाइजेशन (SMAM) योजना के तहत CHC की स्थापना के लिए 40 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक सब्सिडी प्रदान की जाती है। किसान समूहों, एफपीओ, स्वयं सहायता समूहों और ग्रामीण उद्यमियों को रू. 10 लाख तक की वित्तीय सहायता दी जाती है। मध्य प्रदेश सरकार ने 3,800 से अधिक CHC स्थापित किए हैं। जिससे छोटे किसानों को आधुनिक यंत्रों की उपलबधता सुनिश्चित हुई है।

खेती किसानी को आसान बनाती है ये मशीनें, मजदूर और लागत कम कर बढ़ाते हैं मुनाफा

Agri Machine : आज खेती–किसानी में फसल लगाने से लेकर पैदावार निकालने तक में कृषि मशीनों का इस्तेमाल हो रहा है। इसकी मदद से समय की बचत के साथ ही लागत में बचत होगी, तब ही किसान ज्यादा मुनाफा कमा पाएंगे।

कस्टम हायरिंग केन्द्र : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार द्वारा छोटे किसानों को आर्थिक रूप से सशकत बनाने और स्वरोजगार के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू की गई सब मिशन ऑन एग्रीकल्चरल मेकेनाइजेशन (SMAM) कस्टम हायरिंग योजना ग्रामीण भारत में क्रान्ति ला रही है। योजना के तहत किसानों को आधुनिक कृषि यंत्र उपलबध कराए जा रहे हैं, जिससे न केवल उनकी उत्पादकता बढ़ रही है, बल्कि यंत्रों को किराए पर देकर उनकी आय में बढ़ोतरी हो रही है। इसके अलावा सरकार द्वारा प्रदान की जा रही 40 प्रतिशत तक की सब्सिडी और 3 प्रतिशत तक की ब्याज छूट किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

यह योजना ग्रामीण युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने और कृषि यंत्रीकरण (Agri & Machinery) को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन की गई है। शहडोल जिले के सहायक मध्य प्रदेश पीएम किसान योजना से जुड़ने के लिए सरकार चला रही कैंपेन, ये काम भी होंगे पूरे।

शहडोल जिले में अब तक 52 कस्टम हायरिंग केन्द्र स्थापित

शहडोल जिले में अब तक 52 कस्टम हायरिंग केन्द्र स्थापित किए जा चुके हैं। सरकार का लक्ष्य है कि प्रत्येक गांव में कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा मिले, इसके लिए हर साल उन गांवों में आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। जहां अभी तक केन्द्र स्थापित नहीं हुए हैं। योजना का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि लाभार्थी किसान न केवल अपने लिए बल्कि गांव के अन्य किसानों के लिए भी यंत्र उपलब्ध कराएं, जिससे सामुदायिक फायदा हो। किराए से होने वाली आय से किसान बैंक लोन चुका सकते हैं और अपना रोजगार बढ़ा सकते हैं।

शहडोल जिले के ग्राम नरगी की लाभार्थी सीमा बैगा ने बताया रेडियो के माध्यम से मुझे योजना की जानकारी मिली। मैंने एमपी ऑनलाइन के जरिए आवेदन किया और लॉटरी के जरिये मेरा चयन हुआ। कृषि विभाग ने उन्हें पांच दिन की ट्रेनिंग दिलवाई। ट्रेक्टर, कल्टीवेटर और प्लाऊ जैसे यंत्र खरीदे। जिनके लिए उन्हें 6 लाख 86 हजार रुपये की सब्सिडी मिली। पहले खेती में यंत्रों की कमी के कारण उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता था। लेकिन अब आधुनिक यंत्रों के उपयोग से उनकी उत्पादकता बढ़ी है। इन यंत्रों को किराए पर देकर उनकी आय में भी बढ़ोतरी हुई है। इस योजना ने उनका जीवन बदल दिया।

आर्थिक और सामाजिक प्रभाव :

- **लागत में कमी :** CHC के माध्यम से यंत्र किराए पर लेने से किसानों की उत्पादन लागत में 20–30 प्रतिशत की कमी आती है।
- **उत्पादन में वृद्धि :** समय पर खेती और यंत्रों के उपयोग से फसल उत्पादन में 15–20 प्रतिशत तक की वृद्धि देखी गई है।
- **रोजगार सृजन :** CHC के संचालन से ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं।

प्रमुख चुनौतियां :

- **मशीनों की अनुपलब्धता :** फसल सीजन के दौरान यंत्रों की उपलबधता सीमित होती हैं। जिससे किसानों को कठिनाई होती है।
- **उच्च किराया दरें :** कुछ क्षेत्रों में यंत्रों का किराया किसानों की क्षमता से अधिक होता है।
- **तकनीकी ज्ञान की कमी :** कई किसानों को यंत्रों के सही उपयोग की जानकारी नहीं होती, जिससे उनका पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता।

समाधान और सुझाव :

- **पंचायत स्तर पर CHC की स्थापना :** स्थानीय स्तर पर केन्द्र स्थापित करने से यंत्रों की उपलब्धता बढ़ेगी।
- **तकनीकी प्रशिक्षण :** किसानों को यंत्रों के उपयोग के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
- **किराया दरों का मानकीकरण :** यंत्रों के किराए को किसानों की आर्थिक स्थिति के अनुसार निर्धारित किया जाए।

डिजिटल पहल :

सरकार ने "CHC Farm Machinery" मोबाइल ऐप लान्च किया है, जिससे किसान 50 किमी के दायरे में उपलब्ध यंत्रों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और उन्हें किराए पर ले सकते हैं।

निष्कर्ष : कस्टम हायरिंग सेंटर छोटे और सीमांत किसानों के लिए यांत्रिक खेती को सुलभ बनाने का एक प्रभावी माध्यम हैं। सरकारी योजनाओं और डिजिटल पहलों के माध्यम से इन केन्द्रों की पहुंच बढ़ाई जा रही है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि और कृषि क्षेत्र का समग्र विकास संभव हो सकें।

वर्षा ऋतु में पशुओं की रोगों से सुरक्षा

प्रतिभा चौधरी एवं नीलम
सैम हिंगीबॉटम कृषि प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय
इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश)
विभाग–पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन

प्रस्तावना

वर्षा ऋतु भारत में जून से सितम्बर तक चलती है और यह कृषि तथा पर्यावरण के लिए अत्यन्त लाभकारी होती है। किन्तु इस

मौसम में अत्यधिक नमी, गंदगी और कीड़ो–मकोड़ों की वृद्धि के कारण पशुओं को विभिन्न प्रकार की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। वर्षा के दौरान पशुओं की देखभाल और सुरक्षा विशेष रूप से आवश्यक होती है। ताकि उनकी उत्पादकता और स्वास्थ्य दोनों सुरक्षित रह सके।

1. वर्षा ऋतु में होने वाले सामान्य पशु रोग

1. **खुरपका मुँहपका :** यह अत्यन्त संक्रामक रोग है जो गाय, भैंस, बकरी आदि में होता है। इसमें पशुओं के खुरों और मुँह में छाले हो जाते हैं।
2. **गलघोंटू :** यह एक जीवाणु जनित रोग है जो अचानक बुखार, गले में सूजन और मृत्यु तक का कारण बन सकता है।
3. **ब्लैक क्वार्टर :** यह रोग मुख्यतः गाय और भैंसों को प्रभावित करता है। इसमें मांसपेशियों में सूजन और दर्द होता है।
4. **त्वचा रोग :** अत्यधिक नमी के कारण फंगल संक्रमण और परजीवी (त्वचा रोगों का कारण बनते हैं।
5. **कृमि संक्रमण :** गंदे चारे पानी से पेट में कृमि हो जाते हैं। जिससे पशु कमजोर हो जाते हैं।
6. **डायरिया और आफरा :** खराब पाचन और दूषित आहार से दस्त और पेट फूलने की समस्याएँ होती है।

रोग फैलने के कारण :

- ❖ अत्यधिक नमी और गंदगी,
- ❖ दूषित चारा और पानी,
- ❖ कीट पतंगों की वृद्धि (मच्छर मक्खी) आदि,
- ❖ टीकारण और देखभाल की अनदेखी,
- ❖ गंदे और कीचड़ भरे बाड़े।

रोगों से बचाव के उपाय :

- ❖ स्वच्छता बनाए रखें।
- ❖ पशु बाड़ों को रोज साफ और सूखा रखें।
- ❖ बिछावन बदले और कीचड़ जमा न होने दें।
- ❖ गोबर और मूत्र की समय पर सफाई करें।

2. टीकारण कराएं :

- ❖ वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने से पहले आवश्यक टीकों का प्रबन्ध करें।
- ❖ मुख्य रोगों जैसे खुरपका–मुंहपका, गलघोंटू, बीक्यू आदि के लिए समय पर टीकाकरण जरूरी है।

3. स्वस्थ आहार व स्वच्छ पानी :

- ❖ पोषक तत्वों से भरपूर सुखा चारा दें।
- ❖ साफ उबला या फिल्टर किया हुआ पानी पिलाएं।
- ❖ हरी घास देते समय उसे सूखा लें।

4. कृमिनाशक और रोगनाशक दवाएं :

- ❖ हर 3 महीने में कृमिनाशक दवा दें।
- ❖ डॉक्टर की सलाह से रोगनाशक दवाओं का छिड़काव करें।

5. कीट नियन्त्रण :

- ❖ पशुबाड़े में कीटनाशक दवा या नीम के तेल का छिड़काव करें।
- ❖ मच्छरदानी या फ्लाई ट्रैप का उपयोग करें।

6. सुरक्षित और सूखा आश्रय :

- ❖ पशुओं को बारिश से बचाने के लिए टीन या छत वाले बाड़े बनायें।
- ❖ पानी निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

पशुपालकों के लिए सुझाव :

- ❖ पशु की रोजाना स्वास्थ्य जांच करें।
- ❖ बीमार पशु को बाकी पशुओं से अलग रखें।
- ❖ समय पर पशु चिकित्सक से सलाह लें।
- ❖ रोग के कोई लक्षण दिखने पर तुरन्त इलाज शुरू करें।
- ❖ स्थानीय पशु चिकित्सा केन्द्र से सम्पर्क बनाए रखें।

1. **स्वच्छता और साफ सफाई :**

पशुओं के रहने के स्थान की सफाई पशुशाला या गौशाला को नियमित रूप से साफ करना अत्यन्त महत्वपूर्णहै। इससे न केवल पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार होता है बल्कि रोगों के फैलने की संभावना भी कम होती है।

गोबर और गंदगी को हटाना गोबर और अन्य गंदगी को तुरन्त हटाना चाहिए ताकि उससे किसी प्रकार के रोग या संक्रमण न फैलें।

2. टीकारण :

समय पर टीके लगवाना पशुओं को समय पर टीके उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और उन्हें कई खतरनाक बीमारियों से बचाता है। पशु चिकित्सक की सलाह पर अपने पशु चिकित्सक से परामर्श लेकर उनकी सलाह का पालन करना आवश्यक है ताकि पशुओं को सही समय पर सही टीके लग सकें।

3. पोषण :

संतुलित आहार पशुओं को संतुलित और पौष्टिक आहार देना उनकी सेहत के लिए बहुत जरूरी है। इससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और स्वस्थ रहते हें। हरे चारे और साफ पानी की व्यवस्था हरे चारे और साफ पानी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। इससे पशुओं को आवश्यक पोषक तत्व मिलते हैं और वे स्वस्थ रहते हैं।

4. स्वास्थ्य जांच :

नियमित स्वास्थ्य जांच पशुओं की नियमित स्वास्थ्य जांच करवाना आवश्यक है। इससे किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या का समय पर पता लगाया जा सकता है और उसका उचित इलाज किया जा सकता है।

असामान्य लक्षणों पर ध्यान देना किसी भी असामान्य लक्षणों को नजर अन्दाज नहीं करना चाहिए। तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर उनकी सलाह लेनी चाहिए।

5. परजीवी नियंत्रण :

बाहरी और आन्तरिक परजीवियों से बचाव पशुओं को बाहरी और आन्तरिक परजीवियों से बचाने के लिए नियमित रूप से दवाईयां देनी चाहिए। इससे पशुओं को कई प्रकार के संक्रमणों से बचाय जा सकता है।

परजीवियों को नियंत्रित करने के उपाय पशुशाला में भी परजीवियों को नियंत्रित करने के उपाय करने चाहिए ताकि पशुओं को किसी भी प्रकार का खतरा न हो।

6. पर्यावरणीय प्रबन्धन :

गौशाला को सूखा और हवादार रखना गौशाला को हमेशा सूखा और हवादार रखना चाहिए। इससे पशुओं को स्वस्थ वातावरण मिलता है और रोगों के फैलने की संभावना कम होती है।

पानी जमा न होने देना गौशाला में पानी जमा न होने देना

चाहिए। इससे मच्छरों और अन्य कीटों की उत्पति होती है जो पशुओं के लिए हानिकारक है।

7. पशु चिकित्सक से सम्पर्क :

तुरन्त सम्पर्क करना किसी भी स्वास्थ्य समस्या के लिए तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए। उनकी सलाह और मार्गदर्शन का पालन करना आवश्यक है।

सलाह और मार्गदर्शन का पालन पशु चिकित्सक की सलाह और मार्गदर्शन का पालन करने से पशुओं की सेहत में सुधार होता है और इन्हें कई प्रकार की बीमारियों से बचाया जा सकता है।

निष्कर्ष : वर्षा ऋतु में रोगों का प्रकोप बढ़ता सामान्य है। लेकिन यदि पशुपालक सावधानी रखें और सही प्रबनधन अपनाएं तो रोगों से बचाव संभव है। पशु यदि स्वस्थ रहें तो दुग्ध उत्पादन और अन्य पशु उत्पादों में वृद्धि होगी। जिससे किसान की आय बढ़ेगी।

स्वस्थ पशु समृद्ध किसान यही हमेशा ध्येय होना चाहिए।

आयुर्वेद के अनुसार सांगरी की फली के सेवन करने से स्वास्थ्य लाभ

पिंकी शर्मा, बृजेश एवं सुशीला यादव
पौध व्याधि विभाग
राजस्थान कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, उदयपुर

राजस्थान के रेगिस्तान में पाई जाने वाली खेजड़ी के पेड़ की सांगरी फलियां कुदरत का एक ऐसा अनमोल उपहार हैं, जो सेहत के लिए बेहद लाभकारी साबित होती हैं। सांगरी का उपयोग राजस्थान के पारंपरिक व्यंजनों में किया जाता है, लेकिन इसकी असली पहचान इसके औषधीय गुणों से होती है। शाकाहारी खाने के तौर पर यह जैसलमेर में सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। राजस्थान की कठिन जलवायु में खेजड़ी का पेड़ और इसकी सांगरी फलियां पोषण का एक मुख्य सोर्स हैं। सूखी सांगरी, जिसे आमतौर पर बाजार में महंगे दामों पर बेचा जाता है, अपनी औषधीय गुणों के कारण खास मानी जाती है। सांगरी के लिए जलवायु और मिट्टी की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है। यह पौधा शुष्क और गर्म जलवायु में अच्छी तरह से बढ़ता है और इसे कम वर्षा की आवश्यकता होती है। सांगरी की खेती के लिए रेतीली, दोमट या बंजर भूमि उपयुक्त होती है।

सांगरी क्या है ?

खेजड़ी की कच्ची फलियों को सांगरी कहा जाता है। इन्हें हरी और सूखी दोनों अवस्थाओं में बाजार में बेचा जा सकता है। सांगरी फलियों का प्रयोग सब्जी और अचार में किया जाता है, खासकर राजस्थान के पारंपरिक पकवानों में। इसका सबसे प्रसिद्ध व्यंजन ''पंचकूट'' या ''पंचमेल सब्जी'' है, जिसमें सांगरी को अन्य सूखी सब्जियों के साथ मिलाकर तैयार किया जाता है। सांगरी न केवल स्वादिष्ट होती है, बल्कि पोषण से भी भरपूर होती है। कच्ची फलियों में प्रोटीन, विटामिन, और खनिज तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जबकि पकी हुई फलियों में 8–15 प्रतिशत प्रोटीन, 45 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 8–15 प्रतिशत शर्करा, और 9–12 प्रतिशत रेशा होता है, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है।

सांगरी के फायदे

आयुर्वेद के अनुसार, सांगरी दोषों को संतुलित करने में मदद कर सकती है। यह पाचन तंत्र को मजबूत बनातीहै, शरीर कोडिटॉक्स करती है और इम्यूनिटी बढ़ाने में सहायक होती है। इसका सेवन वर्षा ऋतु के बाद शरीर के लिए लाभकारी होता है लेकिन ज्यादा मात्रा में सेवन करने से केशों की हानि की समस्या हो सकती है। इसलिए इसका सेवन सीमित ही करना चाहिए।

पाचन तंत्र को मजबूत बनाने में

सांगरी में प्रोटीन के साथ–साथ फाइबर की भी अधिक मात्रा होती है। इसमें मौंजूद फाइबर आपकी पाचन क्रिया को दुरुस्त करता है और खाना पचाने में मदद करता है। दरअसल, फाइबर पाचन के लिए बेहद जरूरी है, यह कब्ज की समस्या को दूर करने और आंतों की सफाई करने में सहायक होता है। आयुर्वेद में सांगरी को अग्नि बढ़ाने वाली औषधि माना गया है, जो पाचन क्रिया को दुरुस्त करती है। सांगरी का सेवन गैस, अपच और पेट की अन्य समस्याओं को दूर करने में मददगार साबित हो सकता है।

हड्डियों को मजबूत बनाएं

सांगरी में कैल्शियम और फॉस्फोरस जैसे जरूरी खनिज पाए जाते हैं, जो हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। आयुर्वेद के अनुसार, सांगरी के सेवन से हड्डियों की कमजोरी, गठिया और जोड़ों के दर्द में राहत मिल सकती है। इसके सेवन से हड्डियों की समस्याओं से बचाव किया जा सकता है।

शरीर को डिटॉक्स करे–

सांगरी में मौजूद गुण शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करते हैं। आयुर्वेद के अनुसार, यह खून को शुद्ध करती है और त्वचा को साफ और चमकदार बनाती है। सांगरी का सेवन शरीर के भीतर की सफाई करने में मदद करता है जिससे प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं

सांगरी में विटामिन्स के साथ आयरन, मैग्नीशियम और अन्य पोषक तत्व होते हैं, जो इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाते हैं। आयुर्वेद में इसे संक्रमण और बीमारियों से बचाव के लिए एक प्रभावी औषधि माना गया है। सांगरी का सेवन सर्दी–खांसी और वायरल संक्रमण से लड़ने में भी मदद कर सकता है।

शुगर लेवल को कंट्रोल करें–

आयुर्वेद के अनुसार, सांगरी डायबिटीज के मरीजों के लिए एक उपयोगी आहार है। यह ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद करती है, जिससे डायबिटीज के मरीजों को फायदा होता है।

कॉलेस्ट्रॉल कम करती है

कॉलेस्ट्रॉल आज के समय में कई बीमारियों का कारण बन चुका है। सांगरी की सब्जी आपकी शरीर से कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा को भी घटाती है। जिससे हृदय रोगों के बढ़ने की आशंका भी कम हो जाती है। सांगरी न सिर्फ कॉलेस्ट्रॉल बल्कि हृदय गति और उच्च रक्तचाप को भी संतुलित रखती है। इसमें पाया जाने वाला सिरेनिनसी आपके

कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा को घटाता है। कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा घटने से मोटापे का शिकार होने से भी बचते हैं।
सांगरी की फली का सेवन कई तरह से किया जा सकता है, जैसे

सांगरी की सब्जी
सांगरी को अलग–अलग तरह से बनाया जा सकता है, जैसे कि सब्जी, अचार, या दाल।

सांगरी का पाउडर
सांगरी को सुखाकर पाउडर बनाया जा सकता है और इसे विभिन्न व्यंजनों में इस्तेमाल किया जा सकता है ।

सांगरी की फली का सेवन करने से पहले ध्यान रखने योग्य बातें
- ❖ अधिक मात्रा में सेवन न करें
- ❖ सांगरी की फली का अधिक मात्रा में सेवन करने से कुछ लोगों को पेट संबंधी समस्याएं हो सकती हैं
- ❖ गुर्दे की समस्या से पीड़ित व्यक्ति
- ❖ गुर्दे की समस्या से पीड़ित लोगों को सांगरी की फली का सेवन करने से पहले डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए ।

एलर्जी
यदि आपको सांगरी की फली से एलर्जी है, तो इसका सेवन न करें ।

डॉ. एस. आर. ढाका
प्रसार शिक्षा निदेशक

निदेशक की कलम से

जुलाई माह में कृषि कार्य

प्रिय किसान भाईयों,

1. बाजरे की आर.एच.बी.–173, 177, 223 एवं बायोफोटीफाईड संकर किस्में, आर.एच.बी.–233 एवं 234 के साथ ही एच.एच.बी.–67 (इम्प्रूवड), एच.एच.बी.–226, 299 एवं जी.एच.बी.–538, 558, 719 संकर किस्में एवं राज–171 संकुल किस्म की बुवाई करें।
2. सामान्यतः बाजरे की बुवाई के लिए 4 किलो बीज प्रति हैक्टेयर लेवें तथा कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. रखें। बीजों को बुवाई से पूर्व 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। गुन्दिया या चेपा से फसल को बचाने हेतु बीज को नमक के 20 प्रतिशत घोल (1 किलो नमक को पांच लीटर पानी) में लगभग 5 मिनट तक डुबो कर हिलायें, तैरते हुये कचरे तथा बीजों को बाहर निकाल दें।
3. मूंग की आई.पी.एम. 02–03, आर.एम.जी. 268, आ.एम.जी. 344, आर.एम.जी. 492, एस.एम.एल.–668, आर.एम.जी. 975, एम.एस.जे.–118 उन्नत किस्में हैं तथा चंवला की सी.–152, आर.एस.–9, एफ.एस.–68, आर.सी.–19, आर.सी.–101 (सफेद) एवं सी.पी.डी.–119 (करन चंवला) उन्नत किस्में अपनायें। मूंग, उड़द, चंवला व अरहर के बीज को 3 ग्राम थाइरम व इसके बाद प्रति हैक्टैयर 600 ग्राम राईजोबियम कल्चर से उपचारित करके बोयें।
4. आर.जी.सी.–936, आर.जी.सी.–986, आर.जी.सी.–1002, आर.जी.सी.–1017, आर.जी.सी.–1033, आर.जी.सी.–1038, आर.जी.सी.–1066 (लाठी) कर्ण ग्वार–1 (आर.जी.आर.–12–1), आर.जी.सी.–1055 ग्वार की उन्नत किस्मों की बुवाई करें। खरीफ प्याज की पौध रोपाई इस माह के अन्तिम सप्ताह से शुरू करें।
5. सिंचित मूंगफली में दीमक या सफेद लट का प्रकोप दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड 200 एस.एस. 300 मिली. दवा या क्लोरपाईरीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. 1.5 मिली. प्रति लीटर दवा का मिट्‌टी या बजरी में मिलाकर भुरका कर सिंचाई कर देवें।
6. टमाटर की गत माह तैयार की गई पौध को विषाणु व आन्द्र गलन रोग से बचाने के लिए सायन्ट्रानिलिप्रोल 10.26 ओ.डी. दो मिली. व कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।
7. जून माह में तैयार की गई पौध जब 15 से 20 सेन्टीमीटर को हो जावे तो 2X2 मीटर की दूरी पर गड्‌ढ़ों में लगायें।
8. बहुवर्षीय संकर नेपियर घास की उन्नत किस्मों जैसे सी.ओ.–5, ए.पी.बी.एन.–1, आई.जी.एफ.आर.आई–6 व सुप्रिया आदि की सर्कस से रोपाई करें।

प्रमुख संरक्षक : डॉ. बलराज सिंह
संरक्षक : डॉ. एस. आर. ढाका
प्रधान सम्पादक : डॉ. सन्तोष देवी सामोता
डॉ. बी. एल. आसीवाल
डॉ. बसन्त कुमार भींचर
डॉ. शीला खड़र्कवाल
तकनीकी परामर्श : डॉ. एम.आर. चौधरी
डॉ. आर. पी. घासोलिया
डॉ. डी. के. जाजोरिया
डॉ. रोशन चौधरी

बुक पोस्ट

डाक टिकट

पत्रिका सम्बन्धी आप अपने सुझाव, आलेख एवं अन्य कृषि सम्बन्धी नवीनतम जानकारियाँ हमारे मेल jobnerkrishi@sknau.ac.in पर भेजे।

प्रकाशक एवं मुद्रक : निदेशालय, प्रसार शिक्षा, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के लिए अम्बा प्रिन्टर्स, जोबनेर से मुद्रित।